श्री अरनाथ जिन पूजन

स्थापना

(अडिल्ल छन्द)

अरहनाथ के चरण कमल को, निशदिन बारंबार प्रणाम।
निष्कलंक निश्चल निष्कामी, निजानंद निष्कल गुणधाम।
जग आकर्षण छोड़ सभी मैं, आया जिनवर द्वार प्रभो।
पुण्योदय से आज मिले हो, कर देना उद्धार विभो।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(तर्ज-नंदीश्वर श्री जिन....)

जल मल का करता नाश, जल वो ले आया।
हो कर्म कलंक विनाश, आश लिये आया।।
अरनाथ जिनेश महान, चरण शरण आया।
हो स्व-पर भेद विज्ञान, श्रद्धा उर लाया।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन है जग विख्यात, तन आतप हारी।
मन का मेटो संताप, भव व्याधि घेरी।।
अरनाथ जिनेश महान, चरण शरण आया।
हो स्व-पर भेद विज्ञान, श्रद्धा उर लाया।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वरतन के अनुकूल, बहुविधकर्म करे।
शाश्वत आतम को भूल, रूप अनेक धरे।।
अरनाथ जिनेश महान, चरण शरण आया।
हो स्व-पर भेद विज्ञान, श्रद्धा उर लाया।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्पांजलि सुखकार, शील स्वभाव जगे।
भव सिंधु के उस पार, मेरी नाव लगे।।
अरनाथ जिनेश महान, चरण शरण आया।
हो स्व-पर भेद विज्ञान, श्रद्धा उर लाया।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह चरु करूँ मैं भेंट, ऐसा वर देना।
क्षुध् व्याधि पूर्ण हो नष्ट, ऐसा कर देना।।
अरनाथ जिनेश महान, चरण शरण आया।
हो स्व-पर भेद विज्ञान, श्रद्धा उर लाया।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरज उगते ही प्रात, तम को विनशाये।
यह दीप समर्पित आज, आतम उजियारे।।
अरनाथ जिनेश महान, चरण शरण आया।
हो स्व-पर भेद विज्ञान, श्रद्धा उर लाया।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आत्म ध्यान की धूप, सम्यक् ज्ञानमयी।

यह राग द्वेष दुःख रूप, होऊँ कर्म जयी।।
अरनाथ जिनेश महान, चरण शरण आया।
हो स्व-पर भेद विज्ञान, श्रद्धा उर लाया।।7।।
ऊँ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फल चरण चढ़ाऊँ नाथ, शिवफल चाह रखूँ।
कर्मों का करके नाश, शिवफल को निरखूँ।।
अरनाथ जिनेश महान, चरण शरण आया।
हो स्व-पर भेद विज्ञान, श्रद्धा उर लाया।।18।।
ऊँ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
पद मद में हो आसक्त, निज पद को भूला।
जब हुआ दर्श अनुरक्त, मुक्तिद्वार खुला।।
अरनाथ जिनेश महान, चरण शरण आया।
हो स्व-पर भेद विज्ञान, श्रद्धा उर लाया।।9।।
ऊँ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(ज्ञानोदय छंद)

मंगल छिन्न स्वप्न सोलह, श्री मात समुत्रि को आये।
अपराजित अनुत्तर तजकर, नगर हस्तिनापुर आये।।
फाल्गुन शुक्ला तृतीया को नृपराज सुदर्शन हर्षाये।
सुरपति रत्नों को बरसाये, कल्याणक मन को भाये।।1।।
ऊँ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मगसिर शुक्ला चौदश के दिन, तीर्थंकर जग में आये।
इन्द्र हाथ में स्वर्णिम सुंदर, सहस आठ कलशा लाये।।
सिद्धक्षेत्र जाने को, पाण्डु शिला पे ले आये।
कोटी साढ़े बारह बाजे, तरह-तरह के बजवाये।।2।।
ऊँ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मगसिर सुदि दशमी को स्वामी, मेघ नाश होते देखा।
वस्त्राभूषण तजे तुरत ही, नश्वर जग से मुख मोड़ा।।
चक्री पद को त्याग पालकी, वैजयंती में बैठ चले।
हजार नृप संग तेला करके, अरहनाथ मुनिनाथ बने।।3।।
ऊँ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कार्तिक सुदि बारस को प्रभु ने, जिनवर कीपदवी पायी।
छ्यालीस गुण प्रकट हुए और क्षायिक नव लब्धि पायी।।
नाम कर्म की तीर्थंकर शुभ, प्रकृति आज उदय आयी।
अरहनाथ के जयकारों से, सारी धरती गुँजायी।।4।।
ऊँ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चैत्र अमावस्या को स्वामी, नाटक कूट निर्वाणलिया।
एक सहस मुनिनाथ साथ में, सम्मेदाचल धन्य किया।।
अव्याबाध सुखी होकर प्रभु, देह रहित स्वाधीनहुये।
पंचमगति को पाने हेतु, तव चरणों में लीन हुये।।5।।
ऊँ ह्रीं चैत्रकृष्ण अमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य

'ऊँ ह्रीं अर्हं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

दोहा

अरहनाथ भगवान को, मैं पूजूँ धर ध्यान।
आप भक्ति की शक्ति से, करूँ आत्म कल्याण।।1।।

(चाल - शेर)

अरनाथ आपके चरण को नित्य मैं नमूँ।
धर ध्यान आपका प्रभु भव सिंधु से तरूँ।।
देवाधिदेव अरहनाथ आपको नमूँ।
हे सातवें चक्रेश मुनिनाथ को नमूँ।।2।।
हे वर्तमान तीर्थनाथ आपको नमूँ।
हो कामदेव चौदहवें जिन आपको नमूँ।।
सौधर्म इंद्र आपके चरणों में है नमे।
गणधर मुनीन्द्र आपकी भक्ति में रमे।।3।।
जो नित्य प्रभु आपके दर्शन को है पाता।
वो पाप नाश करके शीघ्र मोक्ष है पाता।।
हे नाथ भक्ति आपकी मन से करे सदा।
उसको न विघ्न व्याधियाँ सताती हैं कदा।।4।।
पूजा करे विनय से अरहनाथ आपकी।
हो पूर्ण मनोकामना उस भक्त के मन की।।
शंकादि दोशटारके समदर्श को पाता।
वो आठ अंग धारता निज ज्ञान को पाता।।5।।
तेरह प्रकार के चरित्र धार वो लेते।
शुद्धोपयोगी होय मुनि आत्म को ध्याते।।
वे ग्रीष्मकाल में गिरि शिखरों पे रहे हैं।
वर्षा ऋतु में तरु तले परीषह को सहे हैं।।6।।
हेमंत काल में मुनि बाहर शयन करें।
द्वादश प्रकार तप तपे मुनि कोनमन करें।।
उपवास वास करते निज में रहें मुनीश।
चऊँ घाति घात करके पद पा गये हैं ईश।।7।।
रचना हुई समवसरण सब ताप अघहरा।
है तीस जिसमें श्री कुंथुमुख्य गणधरा।।
हे नाथ आपका सुयश सुना मैं आ गया।
मैं भी बनूँ परमात्माये मन को भा गया।।8।।
अज्ञान मान वश यदि जो दोष हैं हुये।
हे नाथ माफ कीजिये तुम हो दया निधे।।
अरनाथ आपके चरण को नित्य मैं नमूँ।
धर ध्यान प्रभु भव-सिंधु से तरूँ।।9।।

दोहा

मीन चिन्ह युत है चरण, वंदन बारम्बार।
भावों सेदर्शन करूँ, हो जाऊँ भव पार।।10।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

हे अरहनाथ जी, मेरी अरजी, भव-भव का संताप हरो।

नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।
।। इत्याशीर्वादः।।